

अंक 271 वर्ष 56

भाषा

मार्च-अप्रैल 2017

भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय चेतना विशेषांक



सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार

ISSN 0523-1418

भाषा (द्वैमासिक)

वर्ष : 56 □ अंक : 4 (271)

मार्च-अप्रैल, 2017

संपादकीय कार्यालय

केंद्रीय हिंदी निदेशालय,

उच्चतर शिक्षा विभाग,

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार,

पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्,

नई दिल्ली-110066

दूरभाष : 26105211

ईमेल : bhashaunit@gmail.com

वेबसाइट : www.hindinideshalaya.nic.in

बिक्री केंद्र :

नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, सिविल लाइंस, दिल्ली - 110054
सदस्यता हेतु ड्राफ्ट नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली के पक्ष में भेजें।

मूल्य :

स्वदेश में : एक प्रति :

वार्षिक :

विदेश में : एक प्रति :

वार्षिक :

₹ 25/-

₹ 125/-

£ 1 अथवा \$ 2

£ 6 अथवा \$ 12

(डाकखर्च अतिरिक्त : ₹ 11/-)

(डाकखर्च अतिरिक्त : ₹ 66/-)

(डाकखर्च सहित)

(डाकखर्च सहित)

वेबसाइट : www.deptpub.gov.in

ई-मेल : pub.dep@nic.in

दूरभाष : 011-23817823/ 9689

फैक्स : 011-23817846

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे भारत सरकार या
संपादन मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

18. प्रतिबंधित साहित्य और स्वाधीनता
आंदोलन
19. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संदर्भ में
स्वतंत्रता-पूर्व हिंदी कविता
20. नई कविता में राष्ट्रीयता के
विविध स्तर और प्रवृत्तियाँ
21. सत्तरोत्तरी हिंदी कविता और
समकालीन राष्ट्रीय चेतना
22. भारतेंदु एवं द्विवेदी युग में
राष्ट्रीय चेतना
23. राष्ट्रीय चेतना का चितेरा कवि :
मैथिलीशरण गुप्त
24. हिंदी नाटकों में राष्ट्रीय चेतना
25. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में
राष्ट्रीय चेतना के तत्व
26. हिंदी लोकसाहित्य में राष्ट्रीय
चेतना
27. भारतीय हिंदी सिनेमा के गीत और पटकथाओं
में राष्ट्रीय चेतना के तत्व
कविता
28. मधुमक्खियों की कॉन्फ्रेंस
29. भारत महान (रवींद्र काव्य
पर आधारित)
30. ठहाका
31. राष्ट्रीय हानि
32. अक्षर, चित्र और गीत
33. महिषासुरमर्दिनी- द वूमन एंथम
34. मंजिल अभी दूर है

प्राप्ति स्वीकार
संपर्क सूत्र

वेंकटेश कुमार

प्रो. किशोरी लाल व्यास

प्रो. कुमुद शर्मा

डॉ. ऋषभदेव शर्मा

प्रो. मंजु मुकुल कांबले

प्रो. आलोक रंजन पांडे

डॉ. अनुपम माथुर

डॉ. करन सिंह ऊटवाल

प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी

प्रो. चंद्रकांत मिसाल

रंजना अरगडे

शीला मिश्र

अर्चना त्रिपाठी

पूनम जोधपुरी

के.सी. अजयकुमार

प्रतिष्ठा श्रीवास्तव

सुजीत कुमार

हिंदी लोकसाहित्य में राष्ट्रीय चेतना

प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी

हिंदी लोकसाहित्य का फलक अत्यंत विस्तृत है। हिंदी की पाँच उपभाषाओं-राजस्थानी, पश्चिमी-हिंदी, पूर्वी-हिंदी, बिहारी और पहाड़ी हिंदी में विपुल मात्रा में लोकसाहित्य रचा गया है। लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकनाट्य आदि लोकसाहित्य की विधाओं में लोक रचनाकारों ने अपने-अपने क्षेत्र के इतिहास, समाज, संस्कृति की मुखर अभिव्यक्ति की है। राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित लोकसाहित्य की एक समृद्ध परंपरा रही है। लोकभाषाओं के इतिहास को देखें तो पता चलता है कि 10वीं शती तक लोकभाषाओं का उद्भव हो चुका था। तभी से लोकगीतों का एक प्रमुख उद्देश्य संघर्षधर्मी काव्यकर्म बन गया। 12वीं-13वीं शताब्दी के एक देशभाषा (अपभ्रंश या अवहट्ट) के कवि अद्दहमाण (अब्दुर्रहमान) ने नेह रासु 'संदेशरासक' रचकर हमारी सांस्कृतिक पहचान को रेखांकित किया था। 14वीं-15वीं शताब्दी के बाद लोकगीतों और लोक के हर कर्म में सांस्कृतिक चेतना की अनुगूँज सुनाई पड़ने लगी। मध्यकाल में हिंदी की लोकभाषाओं/बोलियों-अवधी, भोजपुरी, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, बघेली, मालदी, निमाड़ी, राजस्थानी आदि में रचे गए लोकगीतों एवं लोकगाथाओं में हमारी सांस्कृतिक विरासत अक्षुण्ण है। तुलसीदास कृत रामचरितमानस (अवधी), सूरदास कृत सूरसागर (ब्रज), जायसी कृत 'पद्मावत' (अवधी), मीराबाई कृत पदावली (राजस्थानी) आदि अनेक काव्यकृतियाँ लोकसाहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। हजारों लोकगीत हिंदी प्रदेश के

विभिन्न अंचलों में लोककंठों में संरक्षित हैं। पुस्तकों में प्रकाशित लोक-साहित्य के आधार पर राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप को समझने का एक प्रयास इस आलेख में संभव है।

सबसे अहम प्रश्न यह है कि बीसवीं शताब्दी में राष्ट्र, राष्ट्रीयता, देश-प्रेम की जो अवधारणा निश्चित की गई है, क्या वह मध्यकाल में मान्य थी? क्योंकि यह स्पष्ट है कि मध्यकालीन भारत में राष्ट्र का स्वरूप आज की तरह व्यापक नहीं था। उस समय देश के विभिन्न क्षेत्रों/राज्यों में राजाओं की अपनी-अपनी जागीरें थीं, उनके अपने-अपने राज्य थे, उनकी क्षेत्रीय भूमि थी और उनका अपना-अपना शासक एवं शासन था, जिसे वे अपना राष्ट्र मानते थे। हर राज्य की जनता अपने राज्य, राजा, संस्कृति और वहाँ की भूमि से प्रेम करती थी। राजा की आज्ञा का पालन करना सर्वोपरि था। अपनी सामाजिक पद्धति से जीने, अपनी भूमि पर मरने और अपने राज्य की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने की भावना रखने को राष्ट्रप्रेम कह सकते हैं। जागनिक कृत 'आल्हाखंड' में देश-प्रेम के इसी स्वरूप की झलक मिलती है—

राज बड़ाओ तुम महबे गढ़ को, यस की ध्वजा
दियो फहराय।

आज खजाना महबे गढ़ को, बेटा तुमने दियो
बढ़ाए॥